REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 4 | JANUARY - 2019

समूह गतीशीलता : एक अध्यापन तंत्र

जयेंद्र आर मेश्राम[1] , डॉ.सौ.राजश्री वैष्णव[2]
[1]Junior Research Fellow , PGTD of Education , R.T.M.N.University Nagpur.
[2]M.Sc., M.Ed., Net, Set, Ph.D., (Edu) , Head & Professor , PGTD of Education , R.T.M.N.University Nagpur .

प्रस्तावना :

भारत का भविष्य भारतीय स्कूलो के चार दिवारी में हो रहा है। यह कोठारी शिक्षा कमिशन का वाक्य है। अर्थात भारतीय स्कूलो में होने वाली शिक्षा प्रकिया के उपर शिक्षाशास्त्री, शिक्षाविदों को भरोसा है। शिक्षा प्रकिया में होने वाली महत्त्वपूर्ण बात है अधिगम – अध्यापन, आचार्य विनोबाजी कहते है 'शिक्षा में कोई भी बात नये से लाई नहीं जाती और नही अस्तीत्व में पाई जाती किंतु सूप्त, चैतन्य अंतरविहीन शक्ती को जागृत करने का एक साधन शिक्षा है। विद्यार्थीयो का सर्वांगीण विकास होने के लिए महत्वपूर्ण शिक्षा प्रकिया के कारको को जानना अती आवश्यक है! और तो पहला विद्यार्थी और दुसरा अध्यापन विद्यार्थी शिक्षा प्रकिया का अती महत्वपूर्ण एवं आवश्यक घटक है। वे समुच्चय शिक्षा प्रणाली का केंद्र बिंदू है।

ॲडमस विद्यार्थी केंद्रीत पध्दती का महत्व बताते समय कहते है।

'Teachers Teaches, Latin to John, John is more important than Latin'

शिक्षा से व्यक्तीमत्व का विकास होना जरूरी है। शिक्षा में विद्यार्थीयों को खुद की रूची से, खुद की योग्यता, क्षमता, दृष्टीकोन से शिक्षा लेने देना चाहिए। पाठयक्रम उनके अनुसार होना चाहिए, अधिगम–अध्यापन की बहोत सी पध्दतीयॉ विद्यार्थी केंद्रित है। और उनको मनोविज्ञान का आधार है।

अध्यापक के पास अधिगम पध्दती का ज्ञान होना चाहिए! T.P. Nun भी यह मानते है की ''मनुष्य जन्म के साथ स्वतंत्र हो, उसे स्वाभविक विकास की, स्वतंत्रता मिलती चाहिए, वा सात्वीक स्वतंत्रता परिवेश के समन्वय में हि हैं। आन्तरिक प्रवृत्तीयों की अभिव्यक्ती की स्वतंत्रता जरूरी है'' **John Henrich Pestalagy** का कहना था कि ''शिक्षा अध्यापन कि सफलता बालक की रूची के अनुसार सिखने पर आधारित ही है।

प्राचिन कालसे आज तक पाठयक्रम निमार्ण और अध्यापन प्रणालियो का एक मानवीय सिध्दांत रहा है। कि मानव विकास की विभीन्न अवस्थाओ में परिवर्तन होते रहना चाहिए। मनुष्य अपने विकास में शैशव, बाल्यवस्था, किशोरावस्था, वयस्क और वृध्द आयू से निकलता है। इन सब अवस्थाओ में उसकी शारीरिक और मानसिक, शक्तीया निरन्तर बदलती रहती है। अस्तु पाठयक्रम और अध्यापन प्रणाली मानव विकास की अवस्था के अनुरूप होनी चाहिए जबकी इस रेस मे रूची बनी रहती है। इसी से शिक्षा सफल होती है। पाठयक्रम निर्माण और अध्यापन प्रणालियों में मानव की विभिन्न अवस्थाओ मे परिवेश की नयी व्याख्या की जानी चाहिए।

जॉर्जपेन ने अपनी पुस्तक **'द प्रिन्सीपल आफ एज्यूकेशन सोशीओ–लॉजी** में शिक्षा का सामूहिक जीवन पर तथा सामूहिक जीवन का शिक्षा पर क्या प्रभाव पडता है। यही नहीं उसने यह भी स्पष्ट किया है कि व्यक्ती को सर्वांगीण विकास करने के लिए उस पर पडने

वाली समाजिक शक्तीयो के प्रभाव का अध्ययन परम आवश्यक है।'

जॉन डयूई अपनी प्रसिध्द पुस्तक **'स्कुल सोसायटी और डेमोक्रेटीक एज्येकेशन'** में शिक्षा समाजशास्त्रज्ञ के महत्त्व को स्विकार करते हूए शिक्षा को सामाजिक प्रकिया माना है। तथा बताया है कि शिक्षा प्रकिया व्यक्ती द्धारा जाती की समाजिक चेतना में भाग लेने से ही विकसीत होती हे। विद्यार्थी अपने व्यवहार का विकास सामुहिक परिस्थिती में करता है। इस लिए शिक्षाशास्त्र मे आधारित अधिगम–अध्यापन पध्दती जैसे टीम वर्क्स, जोडी कार्य, समूह कार्य, समूह अध्ययन पध्दती है जो शैक्षीक फायदे क्या मिलते है। वर्गरचना कैसी हो यह बताते है। वैसे ही समूह गतीशीलता एक तंत्र पध्दती है। जिससे कक्षा में पढाया जा सकता है।

ग्रीक शब्द Force : Dynamic group dynamics is concerned with the interaction of forces among group is in social situation'

Kurt Levin

What is group dynamic? **समूह गतीशीलता क्या?**

समूह गतीशीलता इसे अंग्रेजी में group dynamic **कहते है।**

यह group **और** dynamic **ऐसे दो शब्दो से बना है।**

Group - A number of people or thinking that are together in the same place or that connected in same way.

अर्थात – एक से ज्यादा लोग या वस्तुसे एक ही जगह पे एक ही माध्यम से एकत्रीत आई हुई रहती है इसे समूह कहते है।

Dynamic - Two or more individuals who are connected to come another by social relationship.

दो या दो से अधिक व्यक्ती जो सामाजिक संबंध से एक–दुसरे के साथ जुडे हुए रहते है उसे समूह गतीशीलता कहा जाता है। या विशीष्ठ परिस्थिती के अनुरूप जो भी लोग या वस्तुए एक–दुसरे से क्रिया, प्रतिक्रिया, वर्तन दर्शाने के मार्ग को गतीशीलता कहा जाता है।

परिभाषा समूह गतीशीलता

1) Group dynamics deals with the attitude and behaviors patten of a group, group dynamic concerns how group are formed, what is their functioning thus, it is concerned with the how interaction and focus operating between group.

अर्थात समूह गतीशीलता यह समूह दृष्टीकोन और वर्तन रचना इस से सम्बधीत है। समूह किस प्रकार से स्थापित करे, उनका कार्य क्या होगा। याने आन्तर प्रतिक्रिया के लक्ष केंद्रित करना यह उसका कार्य है।

2) Group dynammic is helping group to work effectively

'समूह गतीशीलता यह कार्य को ज्यादा परिणामकारक बनाानेवाली प्रकिया'

समूह गतीशीलता के गुण वैशिष्टये :

उद्देश और आकार छोडने के बाद सभी समूह के एक समान गुणविशेषताएँ होती है। तो निम्न प्रकार से निचे दिये है।

1. **दो या दो से ज्यादा लोगः** जहां एक आदमी होगा वह समूह नही कहलाता समूह नही कहलाता समूह में दो या दो से अधिक ही लोग होंगे।

LBP PUBLICATION

2. **औपचारिक समाज सरंचना** : समूह मे नियमो कि परिभाषा की होती है।
3. **एक दुसरे के साथ रहता** : एक समूह में एक साथ एक दूसरे के साथ रहतें है।
4. **सामान ध्येय** : सभी की लक्ष प्राप्ती एक ही होती है। और भावनात्मकता से जुडे हूए रहते है।
5. **आमने – सामने आन्तरकिया होती है:–** एक दुसरे के साथ बाते करते है। एक – दुसरे के साथ अपने विचार समझते–समझाते है। एक – दुसरे को अपने विचार बताते है।
6. **एक दुसरे के ऊपर निर्भर होते है** :– समूह के सभी सदस्य एक दूसरे एक दुसरे के ऊपर निर्भर होते है।
7. **समूह सदस्य को खुद परिभाषा करतें है** :– खुद की भुमिका की प्रस्तुती करना पडता है। जों सभी की प्रस्तूती के मानदंड पहले से तय की जाती है।
8. **एक दुसरे को अच्छे से पहचान थे है:–** समूह में सभी सदस्य उद्देंश्य केंद्रीत होते है। इसलिए उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए एक–दुसरे को पहचान थे है।
9. **एक – दुसरे के साथ अच्छा समन्वय होता है** :– समूह मे गतीशीलता होने के लिए अच्छा समन्वय होता है।
10. **स्पष्ट रूप से से अपेक्षाए होती है** :– समूह गतीशीलता यह उद्देश्य से प्रेरित हो के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए वो गतीशीलता होते है। और सूह के सभी से अपनी भूमिका, कार्य, सर्जनशीलता और लक्ष प्राप्ती के लिए स्पष्ट रूप रूप से अपेक्षाए होती है।
11. **समूह नियंत्रण** – समूह में आपस नियंत्रण होता है। समूह के सभी सदस्य उद्देश से प्रारित अपना कार्य करते है। सभी को नियंत्रण में रखने का का कात अध्यापक नेता करता है।

'इस प्रकार से समूह गतीशीलता के गुणवैशिष्टये को समूह में होनेवाली कार्य, प्रकिया, लक्ष्य और अर्न्तगत वार्तालाप के आधार पर उनके खास गुण बताये है।

समूह विकसन के चरण /सोपान निम्न लिखीत है। निचे दिए प्रकार से है। (Tuck man Model 1965)

Adjouring अंतिम चरण प्रकिया

Performing प्रतिसाद देने कि प्रकिया

Norming मानकी करण कि प्रकिया

Storming पढाई की प्रकिया

Forming समूह गठन कि प्रकिया

(Stages of group development)

1. **Forming समूह गठन कि प्रकिया** '– इस चरण प्रकिया में शिक्षक नेता की भूमिका करता है। खासतोर पे विद्यार्थीयों का एक विशीष्ठ उदे्श्य पाने के लिए उन्हें तैयार करता है। विशीष्ठ उदे्श याने पाठयक्रम को समझाने के लिए उन्हें तयार करना है। यहा शिक्षक नेता को ज्यादा कार्य / अल्पसंबध कार्य करना पडता है। और उनका कम सम्बध होता है। यहा शिक्षक का केवल बताने का उत्तरदायित्व होता है। पाठयांश के बारे में विद्यार्थीयो को कार्य देना पडता है। मतलब विद्यार्थीयों को उनकी भूमिका बनानी पडती है, की तुम्हें क्या करना है?

2. **Storming चढाई की प्रकिया** :– इस प्रकिया में शिक्षक द्वारा बताए कार्य को व्यक्तीगत तौर पे समझते है। प्रत्येक सदस्य मन ही मन में उस मसौदे पाठयांश को पढते है। इसमे शिक्षक को पणन का कार्य करना

LBP PUBLICATION

पडता है। इस में शिक्षक को ज्यादा कार्य और विद्यार्थीयो के साथ उच्च सम्बध रखना का कार्य करना पडता है। इस में शिक्षक को ज्यादा कार्य और विद्यार्थीयो के साथ उच्च सम्बध रखना पडता है।

3. Norming मानकी करण की प्रकिया मे विद्यार्थीयों को वार्तालाफ के प्रकार कब करना है। किस के उपर करना है। किस के उपर करना है । इस के नियम तय करते है। विद्यार्थीयो को एक– दुसरे के साथ और शिक्षक के साथ बातचीत करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। चरण एक में दिया हुआ कार्य को प्रस्तूत करने के लिए मानक बनाने पडते है और उसी के अनुसार उपसमूह को या समूह के सदस्य को उसका प्रस्तुतीकरण करना पडता है।

4. Performing प्रतिसाद देणे की प्रकिया :– इस में समूह के सभी सदस्य को – प्रस्तुती प्रस्तुत करने का अवसर दिया जाता है। 'ध्यान प्रस्तुती' करते समय प्रतिसाद देना पडता है। मतलब पाठयांश के आधार पर पुछे प्रश्नों के उत्तर जवाब देणे पडते है। और अपना कार्य तत्पर समूह सदस्य का प्रतिनीधित्व के तौर निभाना पडता है। तो इस प्रकार से समूह विकसन के चरण समूह गतीशीलता अपने शैक्षिक लक्ष्य प्राप्त करने के लिए विद्यार्थी – विघार्थीयों में उद्देश्य से होने वाली किया, वार्तालाफ और कार्य प्रस्तुती करने की प्रकिया है। जो खास तौर कक्ष अध्ययन में इसका उपयोग किया जा सकता है।

समूह गतीशीलता सोपान /चरण की विशेषताए

Formaing **गठन की प्रकिया**	**Storming**	**Norming**	**Performing**
शांत रहना	उच्च स्तर की भावनाए	चिंता को कम करना	विश्वास करना
संघर्ष की परिस्थिती की को टालना	संघर्ष	समूह के प्रति बचन बढना	संघर्ष की स्थिती संभालना
समाजीकरण की प्रकिया	स्पर्धा होती है।	सहकार्यता	स्वयंपूर्णता
समूह उद्देश को पहचानना	Resistance	वचनपूर्ती	खूद संवेदनशील (quooreness) होना पडता है।
	Cliques समझना	मग्नता	
	गूठ बनाना	समाविष्ठ होना	

समूह बनाने का समाजिक तरीका :

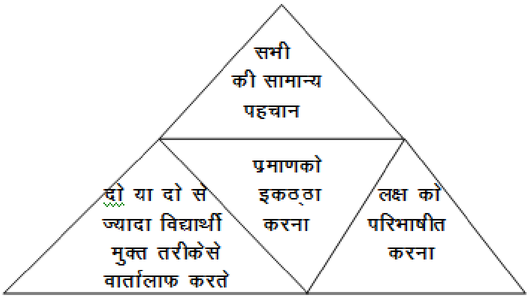

LBP PUBLICATION

शिक्षक की समूह गतीशीलता के प्रकिया में भूमिका/कार्यनीती :–

समूह प्रकिया में अध्यापक को भूमिका निभानी पडती है। समूह का वो नेता होता है। जो शैक्षिक उदेश्य प्राप्त करने के लिए समूह गतीशीलता द्वारा विद्यार्थीयों में विशीष्ट आंतरक्रिया बनाके लाता है। समूह गतीशीलता के सोपान में निम्नलिखीत प्रकार से अध्यापक को भूमिका/कार्यनीती करनी पडती है।

1. **Forming** :– इस प्रकिया में अध्यापक को शैक्षिक उदेश को गताना पडता है, लक्ष रखना पडता है जो आंतरक्रिया द्वारा प्राप्त होनेवाला है। शैक्षीक लक्ष को बनाना पडता है। लक्ष को ध्यान में रखते हुए उन्हे अपनी – अपनी भूमिका निभानी पडती है। इस प्रकिया तें खास कर के विद्यार्थीयो की भूमिका अहम होती है। आपसे व्यक्तीगत तौर पे फिट रहना पडता है। और सोचता पडता है कि हम समूह यहा क्यों है? मैं यहा कैसे फिट हो सकता हु? मेरी भूमिका क्या है? हम क्यू झगड रहे है। मै अपनी भूमिका और अच्छ तरसे कैसे कर सकता है? क्या हम अच्छी तरसे भूमिका निभा सकेंगे? इन जैसे सभी प्रकार के प्रश्नों का उत्तर अध्यापक लक्ष को ध्यान तें रखते हुए देने का काम करता है। इस प्रकिया में अध्यापक केवल शैक्षिक लक्ष को परिभाषीत करना और उनके प्रति विद्यार्थीयो की भूमिका के बारे में तैयार करने का कार्य होता है।

2. **Storming** :– इस प्रकिया में अध्यापक को विद्यार्थीयो के सघर्ष को कत करना पडता है। विद्यार्थीयों मे बहोत से प्रकार के प्रश्न/सवाल होते है। उन्हे समझना पडता है। विद्यार्थीयो को मानसिक रूप से सहायता करनी पडती है इस प्रकिया में विद्यार्थीयो को व्यक्तीगत तौर पे तेरी क्या भूमिका है? ऐसा सोचता है और भी अध्यापक विद्यार्थीयो को वर्तन करने के नियत बताते है। संभाषण करने के लिए उनकी भूमिका क्या है? और उसी के अनुसार वजन करना पडता है। संघर्ष की परिस्थिती होती है। विद्यार्थी – विद्यार्थी संघर्ष संभाषण और मानसिकता से पेचींदा प्रकिया होती है। इस में अध्यापक संघर्ष को कम करने का काम करता और समूह का नेतृत्व करता है।

3. **Norming** :– इस प्रकिया में अध्यापक को समूह के लिए प्रमाणीकरण नियम, तयार करने होते है। लक्ष को प्राप्त करने के लिए कार्यनीती के अनुसार वर्तन, संभाषण करना पडता है। समूह के सभाषण के तौर पे उन्हें अपनी – अपनी भुमिका और कार्य करने के लिए तैयार करना पडता है। नियम में विद्यार्थीयों का सतूह वर्तन दृष्टीकोन, अभिप्राय, भावनाए और कृती इस के बारे में निकष तयार करने का कार्य अध्यापक को करना पडता है।

4. **Performing** :– समूह विकास चरण में प्रतिसाद देणे कि क्रिया को ज्यादा महत्व दिया जाता है। इस में शैक्षिक लक्ष प्राप्त के लिए नियम अनुसार जो कृती, संभाषण, करना पडता है। व्यक्तीगत तौर पे विघार्थी को यह सोचना है कि मै सबसे बेहतर प्रतिसाद कैसे दे सकता हू? मुझे क्या करना है। इस तरह सभी विद्यार्थी यह सोचते है कि, क्या हम सब उचित मार्ग से अपनी जिम्मेदारी निभा रहे है। और हमारा आन्तरिक वार्तालाफ लक्ष की और सही दिशा में हो रहा है। आवश्यकता के अनुसार अध्यापक विद्यार्थीयो को मार्गदर्शन करने का काम करते है।

5. **Adjourning** :– समूह विकास चरण में अंतिम सोपान है। इस सोपान को कक्षा आंतरक्रिया प्रक्रिया में Tuckman के बाद इस सोपान को जोडा गया। इस अंतिम चरण में समूह को खंडीत करने की प्रक्रीया माना है। अंतिम उद्देष साध्य होने के बाद समूह के सदस्य का विलथीकरण होता है।

समूह गतीशीलता पद्धती द्वारा कक्षा पाठ रूपरेखा (Lesson Plan)

समय . 45 मिनिट
पद्धती : महायुद्धोत्तर राजकीय घडामोडी
विषय – राज्यशास्त्र
कक्षा : 9 वी

पाठ के चरण (Steps of Lesson)	अध्ययन अधिगम मुद्दे (Teaching Point)	उद्देश और खास मुद्दे (Objective & Specification)	अध्यापक कृती (Teacher Activities)	छात्र कृती (Student Activities)
समूह स्थापना की प्रकिया (Group formation process) समूह बनाने की प्रकिया	अध्ययन – अधिगम पाठयांश को कैसे पढा जाए इस की कार्यानिती बनाना	अध्ययन – अधिगम के लिए विद्यार्थीयों का समूह बनाना और कक्षा व्यवस्थापन करना Class Management शिस्त का पालन करने के लिए बताना विद्यार्थीयों का अध्ययन अधिगम के लिए समूह बनाना	कक्ष में प्रवेश करतें है । गूड मॉनिग बच्चों, बैठ जावो आज हम समूह गतीशीलता पद्धती से कक्षा में पढगें । कक्षा के सभी विद्यार्थी को अध्ययन – अधिगम समूह बनाने के लिए बताते है जिसमें विद्यार्थी के दैनंदिन उपस्थिती पुस्तक क्रम के अनूसार पहला समूह रोल नं. (1,11,21,31,41,51,61,71,81,91) ऐसे दस बच्चों (विद्यार्थीयो) को डेक्स् के आमने – सामने 5–5 बैठने को बताते है। इसी तरह दूसरा समूह रोल नं. (2,12,22,32,42,52,62,72,82,92) तिसरा समूह रोल नं. (3,13,23,33,43,53,63,73,83,93) चौथा समूह रोल नं. (4,14,24,34,44,54,64,74,84,94) पाचवा समूह रोल नं. (5,15,25,35,45,55,65,75,85,95) छटवा समूह रोल नं. (6,16,26,36,46,56,66,76,86,96) सातवा समूह रोल नं. (7,17,27,37,47,57,67,77,87,97) आठवा समूह रोल पं. (8,18,28,38,48,58,68,78,88,98) नौवा समूह रोल नं. (9,19,29,39,49,59,69,79,89,99) दसवा समूह रोल नं. (10,20,30,40,50,60,70,80,90,100) इस तरह से कक्षा के सभी विद्यार्थीयो को अध्ययन – अधिगम समूह में शामिल किया जाता है। अब कक्षा में दस समूह बन चुके है। अध्यापक प्रत्येक समूह का व्यवस्थापन करते है।	विद्यार्थी खडे हो के गूड मॉनिग सर बोलते बैठ जाते हैं। Listening पहले समूह में शामिल होनेवाले विद्यार्थी अपने समूह में शामिल होते है। इस तरह से विद्यार्थी अपने रोल नंबर के अनूसार अपने – अपने समूह में शामिल हो जाते है । विद्यार्थी अध्यापक के सूचनाओं का पालन करते है। शामिल हो जातें है। और समूह के प्रति एकरूप हो जाते है ।

LBP PUBLICATION

पाठ के चरण (Steps of Lesson)	अध्ययन अधिगम मुद्दे (Teaching Point)	उद्देश और खास मुद्दे (Objective & Specification)	अध्यापक कृती (Teacher Activities)	छात्र कृती (Student Activities)
द्वंदवाली प्रकिया (Storming process)	**महायुद्धोत्तर राजकीय घडामोडी चला थोडी उजळणी करूया!** या मागील इयत्तांच्या नागरिकशास्त्रांच्या पाठ्य पुस्तकांमधून आपण स्थानिक शासनसंस्था, भारतेच्या संविधान आणि आपल्या देशातील राज्यपद्धती किंवा शासनाची रचना यांचा अभ्यास केला. या इयत्तेत आपण आता भारताचे जगाशी असणारे संबंध पाहणार आहोत. भूगोलाच्या अभ्यासातून तुम्हांला जगाची भौगोलिक रचना समजली असेल. इतिहासाच्या अभ्यासातून ऐतिहासिक काळातील जागतिक घडामोडी समजल्या असतील. राज्यशास्त्राच्या अभ्यासातून आपण आता भारताचे जगाशी असणारे संबंध व महत्वाच्या जागतिक समस्या समजून घेणार आहे. आपण सर्वजन वेगवेगळया कारणांसाठी, सोई–सुविधांसाठी समाजातील व्यक्ती, संस्था व संघटनांवर अवलंबून असतो, आपले समाजातील जीवन परम्परावलंबी असते व त्यात परस्पर सहकार्य खूप महत्वाचे असते हे आपण पाहिले. हे असे व्यक्ती आणि समाजाबाबत आहे, तसेच ते विविध राष्ट्रांबाबतही आहे. भारताप्रमाणे जगात अनेक स्वतंत्र देश आहेत. त्यांच्यात सातत्याने काही देवाण – घेवाण चाललेही असते, व्यवहार होत असतात. ही स्वतंत्र राज्ये परस्परांशी करारही करत असतात. या सर्व स्वतंत्र व सार्वभौम देशांची मिळून एक व्यवस्था तयार होते. तिला आपण आंतरराष्ट्रीय व्यवस्था म्हणतो. या आंतरराष्ट्रीय व्यवस्थेची काही वैशिष्टये आपण जाणून घेऊ. **परस्परावलंबन** : जगातले सर्व देश कोणत्या न कोणत्या कारणांसाठी परस्परांवर अवलंबून असतात. राष्ट्र कितीही मोठे, समृद्ध आणि विकसित असो, ते कधीच सर्व बाबतीत स्वंयपूर्ण असू शकत नाही. मोठया राष्ट्रांनाही अन्य त्यांच्या सारख्याच मोठया आणि छोटया राष्ट्रावंर अवलबूंन राहावे लागते. म्हणून परस्परावलंबन हे आंतरराष्ट्रीय व्यवस्थेचे म्हणजेच आजच्या जागतिक व्यवस्थेचे एक महत्वाचे वैशिष्टय आहे. **मला पडलेले प्रश्न** :	अध्ययन – अधिगम कार्य करने के लिए विद्यार्थीयों को तैयार करना. अध्ययन अधिगमन के लिए विद्यार्थीयों को कार्य देना. समूह मे कार्य कैसे करना, उसके महत्त्व बताना समूह के हर विद्यार्थीयों को अपनी – अपनी जिम्मेदारी निभाने के लिए तयार करना.	तो विद्यार्थीयों आज हम 'समूह घडामोडी', यह पाठ पढ़नेवाली है। समूह की स्थापना करने के तुरंत बाद विद्यार्थीयोंके बनाए हुए समूह क्र. 2 को अध्यापक कार्य देते है। समूह क्र. 2 में (2,12,22,32,42,52,62,72,82,98) इ. नंबर के विद्यार्थीयों का समावेश होता है। इस तरह से सभी विद्यार्थीयों के अधिगम को अध्यापक – अध्ययन – कार्य देते है। दिए हूए कार्य मे से आपके हिस्से का पढ़ना है। कार्य को आपस में बाटके पढ़ना है। खुद को समझना हे। आपस में बताना है। सभी की रॉय लेनी है, चर्चा करनी है। और फिर उसको हस्तलिखीत नोटस् बनाने है। अध्यापक का भी आप सहयोग ले सकते हो। नियम / तत्व अध्यापक विद्यार्थीयों को बनाने है।	इस पाठ के चरण में विद्यार्थीयो के मन में द्वंद्व शुरू होना है। कि अध्यापक अब क्या बताऐंगे. अध्यापक को सुनने के लिए तयार होते है। (To enable the student for listening) यहॉं सुनने का काम करते है। कार्य को आपस ये कैसे बाटना है। कार्य के समान हिस्से करना है। खुद समझ के आपस मे बनाना है। सभी की रॉय लेनी है। और अपने हस्तलिखीत नोटस् भी बनाने है। हो सके तो

	● व्यक्ती आणि राष्ट्रांच्या परस्परावलंबन काय फरक असतो बरे? ● श्रीमंत देश आणि गरीब देश अशी काही विभागणी असते का? ● देशाचा कारभार जसा संविधानाच्या आधारे चालतो, असे जागतिक पातळीवर एखादे 'संविधान' असते का? ● आंतरराष्ट्रीय व्यवस्थेत सर्वोच्च स्थान कोणाला असते? परराष्ट्र धोरणाच्याद्वारे आंतरराष्ट्रीय संबंध प्रत्येक राष्ट आपल्या अंतर्गत व्यवहारांसाठी त्याचप्रमाणे अन्य राष्ट्रांशी कसे व्यवहार करावेत. याविषयी निश्चित धोरण ठरवते. अशा धोरणाला परराष्ट्र धोरण असे म्हणतात. भारताच्या परराष्ट्र धोरणांचा आपण अधिक विस्ताराने पुढील प्रकरणांचा अभ्यास करणार आहोत.			अध्यापक द्वारा मदद भी लेनी होगी इ. नियम/तत्व विद्यार्थी अध्यापक द्वारा सुनने का काम करके समझ लेते है।

पाठ के चरण (Steps of Lesson)	अध्ययन अधिगम मुद्दे (Teaching Point)	उद्देश और खास मुद्दे (Objective & Specification)	अध्यापक कृती (Teacher Activities)	छात्र कृती (Student Activities)
Norming Process (मानक बताने की प्रकिया)	भारतीय संविधानाची परिभाषा समजणे भारतीय लोकशाही समजणे भूगोलाचा व इतिहासाचा अभ्यास का आवश्यक आहे हे समजणे	अध्ययन – अधिगम के लिए दिए हुए कार्य को मन ही मन में पडना उनको समझना, और अपने नोट्स तयार करना.	(मानक बताने की प्रकिया में अध्यापक की भूमिका) संपूर्ण कक्षा समूह का लेता के तौर पे अध्यापक यहा काम करता है। समूह के प्रत्येक सदस्य को पाठयांश कार्य बराबरी में बॉट देते है। पाठयांश को म नही मन में पढ़ने को बताते है। पढ़ते समय पाठयांश सिद्धांत, संकल्पना, पद्धती, परिभाषा, कार्यो, कारण, स्पष्टीकरण आदि के बारे में विद्यार्थी खारा लिखित नोट्स बनाने के लिए कहा जाता है। समूह व्यवस्थापन का कार्य करते है। समूह आंतरक्रियाओ का व्यवस्थापन करते है।	यहा विद्यार्थी अध्यापक द्वारा बताये नियम के अनुसार निम्नलिखित प्रकार से नोटस निकालते है। भारताचे संविधान म्हणजे भारताचा सर्वोच्च कायदा होय. भारताने लोकशाहीचा स्वीकार केला असून, संसदीय षासन पद्वतीचा स्विकार केला. भूगोलाच्या अभ्यासातून आपल्याला तबाची भौगोलिक रचना समझण्यास मदत होते. इतिहासाच्या अभ्यासातून ऐतिहासिक काळातील जागतीक घडामोडी समजल्या जातात.

LBP PUBLICATION

LBP PUBLICATION

पाठ के चरण (Steps of Lesson)	अध्ययन अधिगम मुद्दे (Teaching Point)	उद्देश और खास मुद्दे (Objective & Specification)	अध्यापक कृती (Teacher Activities)	छात्र कृती (Student Activities)
Performing Process (प्रतिसाद देने की प्रकिया)	भारतीय संविधान म्हणजे भारताचा सर्वोच्च कायदा. भूगोलाच्या अभ्यासातून जगाची भौगोलिक रचना समजली जाते. इतिहासाच्या अभ्यासातून ऐतिहासिक काळातील जागतीक घडामोडी समजल्या जातात. **आंतरराष्ट्रीय व्यवस्थेची व्याख्या :** सर्व स्वतंत्र, सार्वभौम देशात सातत्याने देवाण–घेवाण करण्यासाठी सर्व देशाची मिळून एक व्यवस्था तयार होते त्याला आंतरराष्ट्रीय व्यवस्था असे म्हणतात. व्याख्या – परस्परावलंबन ज्गातील सर्व देश हे कोणत्या ना कोणत्या कारणांसाठी परस्परांवर अवलंबून असतात. त्याला परस्परावलंबन असे म्हणतात.	अधीगम – कार्य प्रस्तूत करना विद्यार्थीयो को प्रश्न पुछने के लिए बताना	इस पडाव मे अध्यापक विद्यार्थीयो को दिये हुऐ कार्य को कक्षा के आगे समूह के प्रत्येक नेता को Kaching Context में दिए हुऐ कार्य को प्रस्तुत करने के लिए आंमत्रीत करता है। समूह क. 1 का नेता यहा आगे आके समूह कार्य को प्रस्तुत करे. और बाकी समूह के सभी सदस्य को लिखने के लिए बताने	विद्यार्थी भूमिका – इस प्रकिया में विद्यार्थी समूह कार्य आपस से चर्चा दवारा निकाले हक को कक्षा के सामने प्रस्तुत करना है। प्रस्तुत करना है। . भारतीय संविधान म्हणजे काय? . भुगोलाच्या अभ्यासातून कशाची मदत होते? . इतिहासांच्या अभ्यासातून कशाची मदत होते? . आंतरराष्ट्रीय व्यवस्था म्हणजे काय? ही संकल्पना समजावून सांगतात. . भारताने कोणत्या शासन पद्धतीचा स्विकार केला? परस्परावलंबनची व्याख्या सांगतात. परस्परावलंबन हे आंतरराष्ट्रीय व्यवस्थेचे महत्त्वाचे वैशिष्टे कसे आहे ते मुद्याच्या आधारे समजून सांगतात. परराष्ट्र धोरणाची संकल्पना व्याख्यासह स्पष्ट करून सांगतात.

LBP PUBLICATION

पाठ के चरण (Steps of Lesson)	अध्ययन अधिगम मुद्दे (Teaching Point)	उद्देश और खास मुद्दे (Objective & Specification)	अध्यापक कृती (Teacher Activities)	छात्र कृती (Student Activities)
Adjorning Process (समापन की प्रकिया)	भारतीय संविधानाची परिभाषा भारतीय लोकशाही म्हणजे काय? भूगोलाचा व इतिहासाचा अभ्यास का आवश्यक आहे? परराष्ट्र धोरण कशाला म्हणतात? आंतरराष्ट्रीय व्यवस्था म्हणजे काय? परस्परावलंबनाची व्याख्या इ. संकल्पना, व्याख्या व संबंध आपण अभ्यास केला.	अधीगम – अध्यापन द्वारे पुनरावृत्ती करणे समूह प्रक्रिया समापनासाठी प्रवृत्त करणे	तो विद्यार्थिओ आज हममे समूह गतीशीलता अध्यापन पद्धती द्वारा भारतीय संविधानाची परिभाषा भारतीय लोकशाही की व्याख्या भूगोल आणि इतिहास पढ़ना क्यू आवश्यक आहे? परराष्ट्र धोरण किसे कहते है? आंतरराष्ट्रीय व्यवस्था याने क्या होता है? और परस्परावलंबन कि व्याख्या तो इस प्रकार से यह पाठ पढ़ा है। अब हमारा समूह विलूप्त होता है। कल और मिलेंगे नव्या पाठ पढ़ने के लिए	विद्यार्थी सूनने का काम करते है। समूह से अलग होने के लिए तयार होते है। और अपने अपने जगह पे बैठ जाते है।

इस प्रकार समूह गतीशीलता अधिगम प्रकिया की एक नई तकनीक है जो अध्यापक को सामाजिकीकरण प्रकिया से विद्यार्थीयो को पढाया जा सकता है। जिससे नये पाठयकम बदलाव में विद्यार्थीयो की कार्यक्षमता को और भी कार्यक्षम, अधिगम प्रकिया को और रूचीयुक्त करके अधिगम – अध्यापक करने का काम करेगी.

LBP PUBLICATION

संदर्भ :—

1. Abrams D., Rutland A, Camerah L. (Dec 2013)' the development of Subjective group dynamics: Children's Jugment of Normativ and Deviant in group and out group individual's Deport of Psycholosy uni of Knet. UK (www. Kar. Kent . al. UK.)
2. Collen, L, Thercsa K. (2008), Understanding the influence of Organization Culure and group dynamic on organizational change and Karning, univercity of calogary, canda (www. emeraldin sight. com/0969 - 6471. htm)
3. Dorwin C., Alvin 2 ander (Winter 2000) 'origin of group dynamics group Facilition: A research and Application. Journal No - 2 (www. idf world org)
4. Kurt Kewin(1943) Frontier'ds in group dynamics' Bulletin of the national research council (www. hum sayepub.com)
5. Lew H. mc Avoy, Dehines S.M, L. Allison Stringer (1992) group Development and group dynamics in out door Education (ERIC) University of Minesota (www. eric. org).
6. Michael sweet, L.K Michalsen (2007) How group dynmics research can inform the thery and practice of post secondary small group learning' original articl, entral uni. of U.S.A.
7. Baron Robert A. (2012) Social psychology, pearson Education publication UP. Noida,
8. Forsyth Donelson R. (2014) Group dynamias, cengage learning India Pvt., Ltd., Delhi

जयेंद्र आर मेश्राम

Junior Research Fellow , PGTD of Education , R.T.M.N.University Nagpur.

LBP PUBLICATION